

गणतंत्र दविस 2022

प्रलमिस के लयि:

भारतीय संवधिन की वशिषताएँ और संबधति पृष्ठभूमि।

मेन्स के लयि:

गणतंत्र दविस का महत्त्व और भारतीय लोकतंत्र के समक्ष चुनौतियाँ।

चर्चा में क्यों?

हर वर्ष 26 जनवरी को भारतीय संवधिन को अपनाने के उपलक्ष्य में गणतंत्र दविस (वर्तमान 73वाँ) मनाया जाता है, जो 1950 में इसी दनि अर्थात् 26 जनवरी को लागू हुआ था।

- संवधिन देश का सर्वोच्च कानून है और नागरिकों से इसका पालन करने की अपेक्षा की जाती है।

परमुख बदि

■ पृष्ठभूमि:

- 15 अगस्त, 1947 को भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बन गया। यह वह तारीख है जसि लॉर्ड लुई माउंटबेटन द्वारा नरिधारति कयिा गया था जैसा कि [द्वितीय विश्व](#) युद्ध के बाद मतिर देशों की शक्तियों को जापान की अधीनता की दूसरी वर्षगाँठ के रूप में चहिनति कयिा गया था।
- भारत के स्वतंत्र होने के बाद इसका अपना कोई संवधिन नहीं था। जो कानून उस समय वदियमान थे, वे एक सामान्य कानून प्रणाली और "भारत सरकार अधनियिम, 1935" के एक संशोधति संस्करण पर आधारति थे, जसि ब्रिटिश सरकार द्वारा लाया गया था।
- लगभग दो सप्ताह बाद [डॉ. बी. आर. अंबेडकर](#) की अध्यक्षता में भारतीय संवधिन का मसौदा तैयार करने हेतु एक मसौदा समति नियुक्त की गई और अंततः भारतीय संवधिन 26 नवंबर, 1949 (संवधिन दविस) को तैयार हुआ और इसे स्वीकार कयिा गया।
 - दो महीने बाद 26 जनवरी 1950 को संवधिन लागू हुआ।
- 19 दसिंबर, 1929 को भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस ने अपने लाहौर अधविशन में "पूर्ण स्वराज" या पूर्ण स्वशासन का एक ऐतिहासिक प्रस्ताव पारति कयिा।
- कॉन्ग्रेस पार्टी द्वारा यह घोषणा की गई थी कि 26 जनवरी, 1930 को भारतीयों द्वारा "स्वतंत्रता दविस" के रूप में मनाया जाएगा।
 - कॉन्ग्रेस पार्टी के अध्यक्ष रहे पंडति जवाहरलाल नेहरू ने लाहौर में रावी नदी के तट पर तरिगा फहराया। इस दनि को अगले 17 वर्षों तक पूर्ण स्वराज दविस के रूप में मनाया जाता राह।
- इस प्रकार जब 26 नवंबर, 1949 को भारत के संवधिन को अपनाया गया, तो कई लोगों ने राष्ट्रीय गौरव से जुड़े इस दनि (26 जनवरी) पर कानूनी दस्तावेज़ को स्वीकार करना और लागू करना आवश्यक समझा।

■ महत्त्व:

- गणतंत्र दविस भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण दनि है क्योंकि इसी दनि भारत ने अपना संवधिन अपनाया था और देश के अपने कानूनों की घोषणा की थी।
- **ब्रिटिश औपनिवेशिक भारत सरकार अधनियिम (1935)** को अंततः बदल कर देश एक नई शुरुआत करने के लयि तैयार था।
- इसके अतिरिक्त इसी दनि भारत के संवधिन की प्रस्तावना को भी लागू कयिा गया था।
 - प्रस्तावना मोटे तौर पर एक व्यापक बयान है जो संवधिन के परमुख सदिधांतों को प्रस्तुत करती है।
- इसी दनि भारत ने **औपनिवेशिक व्यवस्था को समाप्त** कयिा और **एक संप्रभु लोकतांत्रिक** गणराज्य बनकर एक नई सुबह की शुरुआत की।
- यह दनि हमारे समाज और हमारे सभी नागरिकों के बीच **स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं समानता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि** करने के लयि हमारे लोकतंत्र और गणतंत्र के मूल्यों को मनाने का अवसर है।
- यह दनि एक विशाल राष्ट्र की इच्छा का जश्न मनाता है जो भारत **कीवविधिता में एकता का** उदाहरण प्रस्तुत करते हुए **एकल संवधिन के माध्यम से शासति** होना चाहता है।

MAJOR CONSTITUTIONAL AMENDMENTS THAT CHANGED THE COURSE OF INDIA

1951 (1ST AMENDMENT)

Introduced 9th Schedule to keep certain laws beyond the scope of judicial review

1956 (7TH AMENDMENT)

States reorganised by language; Union Territories introduced

1976 (42ND AMENDMENT)

'Socialist' and 'Secular' added in the Preamble; fundamental duties prescribed

1978 (44TH AMENDMENT)

Right to Property knocked off from the list of fundamental rights

1985 (52ND AMENDMENT)

Defection becomes illegal

1989 (61ST AMENDMENT)

Voting age reduced to 18 from 21 years

1992 (73RD AND 74TH AMENDMENT)

Direct election for Panchayats and urban local bodies

2002 (86TH AMENDMENT)

Free and compulsory education for children between 6 to 14 years

2019 (103RD AMENDMENT)

10% reservation for economically weaker upper castes

2016 (101ST AMENDMENT)

Introduction of the Goods and Services Tax (GST)

■ भारतीय लोकतंत्र के लिये खतरा:

- हालाँकि भारत ने दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में अपनी एक जगह बनाई है, लेकिन यह विकास के नाम पर बहुत पीछे छूट जाता है।
- गरीबी वर्तमान भारत की सबसे बड़ी चुनौती बनी हुई है, अधिकांश लोग गरीबी रेखा के नीचे अमीर एवं गरीब के बीच एक वशाल वभिजन के साथ जीवन यापन कर रहे हैं।
- वषिम महिला अनुपात, आर्थिक अवसरों तथा मज़दूरी में असमानता, हिसा, कुपोषण आदिके साथ लैंगिक भेदभाव जैसे सभी स्तरों पर बना हुआ है।
- सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरवाद ने भारत में एक बहुत ही खतरनाक रूप ओए भयानक अनुपात हासिल कर लिया है। यह भारत की राष्ट्रवादी पहचान का अपमान है तथा इसकी उभरती धर्मनिरपेक्ष संस्कृति के लिये दुखद है।
- भारतीय लोकतंत्र भी क्षेत्रवाद की चुनौतियों का सामना कर रहा है जो मुख्य रूप से क्षेत्रीय असमानताओं और विकास में असंतुलन का परिणाम है।
- राज्य स्तर पर और राज्य के भीतर नरितर असमानता के कारण उपेक्षा, अभाव और भेदभाव की भावना पैदा होती है।
- चुनाव, जो कि लोकतंत्र की सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति के रूप में काम करते हैं, राजनेताओं और राजनीतिक दलों द्वारा धन एवं बाहुबल के दुरुपयोग से प्रभावित होते हैं।
- अधिकांश राजनेताओं के खिलाफ आपराधिक मामले लंबित हैं; वही चुनाव के लिये धन का स्रोत संदिग्ध बना हुआ है।

संप्रभु, लोकतांत्रिक, गणतंत्र

- संप्रभु: 'संप्रभु' का तात्पर्य है कि भारत न तो किसी अन्य राष्ट्र पर निर्भर है, बल्कि एक स्वतंत्र राज्य है। इसके ऊपर किसी का कोई अधिकार नहीं है, यह अपने मामलों का संचालन करने हेतु स्वतंत्र है।

- **लोकतांत्रिक:** यह 'लोकप्रिय संप्रभुता' के सिद्धांत पर आधारित है, अर्थात सर्वोच्च शक्ति का अधिकार आम लोगों के पास होता है।
- **गणतंत्र:** प्रस्तावना इंगति करती है कि भारत में एक निर्वाचित प्रमुख होता है, जिसे राष्ट्रपति कहा जाता है। वह अप्रत्यक्ष रूप से पाँच वर्ष की नशित अवधि के लिये चुना जाता है।

आगे की राह

- हमारे गणतंत्र ने एक लंबा सफर तय किया है और हमें इस बात की सराहना करनी चाहिये कि नई पीढ़ियाँ इस गणतंत्र को कतिनी दूर ले आई हैं। साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिये कि हमारी यह यात्रा अभी पूरी नहीं हुई है।
- मात्रा से गुणवत्ता तक- उपलब्धि और सफलता के हमारे मानदंड को फरि से जाँचने की आवश्यकता है; ताकि इसे एक साक्षर समाज से एक ज्ञानी समाज की ओर ले जाया जा सके।
- समावेश की भावना को अपनाए बनिा भारत के विकास की कोई भी अवधारणा पूरी नहीं हो सकती है। भारत का बहुलवाद इसकी सबसे बड़ी ताकत है और दुनिया के लिये यह सबसे बड़ा उदाहरण है।
- 'भारतीय मॉडल' विविधता, लोकतंत्र और विकास के एक तपिाई पर टिका हुआ है जहाँ हम एक को दूसरे के ऊपर नहीं चुन सकते हैं।
- राष्ट्र को सभी वर्गों और सभी समुदायों को शामिल करने की आवश्यकता है, ताकि राष्ट्र एक ऐसे परिवार में बदल जाए जो प्रत्येक व्यक्ति में विशिष्टता और क्षमता का आह्वान व प्रोत्साहन कर सके।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/republic-day-2022>

